ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO. 248-249
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

काशीनाथ सिंह की कहानियाँ : सामाजिक बदलाव के सन्दर्भ

अजय बिहारी पाठक
एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, कुँवर सिंह पी०जी० कॉलेज, बलिया (उ०प्र०), भारत

काशीनाथ सिंह हिंदी के बड़े कहानीकार हैं। वे साठोत्तरी पीढ़ी के कहानीकारों में से एक हैं और आज भी उसी जीवंतता के साथ सृजनशील हैं। उनके कहानी संसार की विविधता और वस्तुपरकता बरबस अपनी और ध्यान खींचती है। काशीनाथ सिंह के पास एक यथार्थ कथादृश्टि है, जिससे वे अपने परिवेश की विसंगतियों को बहुत पैनी निगाह से देखते हैं। 'लोग बिस्तरों पर', 'सुबह का डर', 'नयी तारीख', 'प्रतिनिधि कहानियाँ' और 'सदी का सबसे बड़ा आदमी' उनके चर्चित कहानी संग्रह हैं। इन कहानी संग्रहों में लेखक की सामाजिक यथार्थ के प्रति वैज्ञानिक .ष्टि का पता चलता है, जिसकी बदौलत वे बदलते यथार्थ को अपनी कहानियों में दर्ज करने में सफल हुए और स्वयं को निरंतर समकालीन बनाये रखा।

प्रस्तावना– 'सुधीर घोषाल' राजनीतिक सन्दर्भ वाली कहानी है। यह नक्सलवादी आंदोलन के प्रभाव में लिखी गयी कहानी है। इस कहानी से कहानीकार के रूप में काशीनाथ सिंह को बहुत ख्याति मिली। इसमें मिल के प्रबंधक और मजदूर के बीच संघर्ष का चित्रण किया गया है। कहानी में काशीनाथ सिंह की वर्ग–चेतना क्रन्तिकारी रूख इख़्तियार करती है और उनकी मार्क्सवादी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता का पता चलता है। मार्क्सवाद के किताबी ज्ञान के सहारे क्रांति का सपना देखने वाले बुद्धिजीवी वर्ग के ढुलमुल चरित्र की ओर भी कहानी में संकेत उभरते हैं। कहानी का 'मैं' बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतीक है। इसकी और इशारा करते हुए काशीनाथ सिंह ने लिखा है –''एक तरफ इमारत के लोग थे जो कम्युनिष्ट कहकर मेरी खिल्ली उड़ाते थे और हर हरकत को संदेह से देखते थे, दूसरी तरफ खदान में काम करने वाले लोग थे जो मुझे प्रशासक के घर और उसके लड़के के संग देख चुके थे। इन दोनों के बीच 'मैं' कहाँ था? बार–बार यह सवाल मुझे पीट रहा था कि मैं किधर हूँ?'' पूरी कहानी से स्पष्ट है कि समाज में परिवर्तन के लिए सिद्धांत को व्यवहार में लाना जरूरी है। सिद्धांत और व्यवहार की फाँक को उभारने में यह कहानी बेजोड़ है।

काशीनाथ सिंह की इस कहानी पर गढ़ी हुई होने के आरोप भी लगाए गए हैं। जनवादी कहानी आंदोलन के दौर में कहानीकारों ने आंदोलन की मांग के अनुसार भी कहानियाँ गढ़ीं। सुधीर घोषाल के सन्दर्भ में भी यह बात कही जा सकती है। डॉ रामकली सर्राफ ने लिखा है कि ''डॉ काशीनाथ सिंह की 'सुधीर घोषाल' कहानी अति क्रन्तिकारी चेतना से लैस है जहाँ वस्तु चयन में व्यावहारिक सतर्कता का अभाव मिलता है। रचनाकार के मध्यवर्गीय संस्कार उसके मनोजगत को कथानायक लेकर चलता है, जहाँ जीवन में नहीं वल्कि किताबों के बीच क्रन्तिकारी चेतना को व्यक्त होते देखा जा सकता है'' किन्तु काशीनाथ सिंह की कहानियों को देखते हुए यह आसानी से कहा जा सकता है कि एक प्रगतिशील कथाकार के रूप में उन्होंने अपनी जीवनदृष्टि को हमेशा आलोचनात्मक बनाये रखा और कुछ न कुछ सीखने की ललक उनमें बनी रही। आगे चलकर उन्होंने अपनी कहानियों के लिए स्वाभाविक जमीन ढूँढ ली।

'लाल किले के बाज' में रोमांटिक क्रांतिकारिता पर व्यंग्यात्मक चुटकी ली गयी है। कहानी का नायक 'जादू' व्यक्तिगत जीवन में सामंती आचरण पसंद करता है, किन्तु सिद्धांत से मार्क्सवादी है। ऐसे चरित्रों में सामंतवाद को उखाड़ फेंकने की जुबानी क्रांति ज्यादा दिखाई देती है। एक तरफ तो वह नौकर से शरीर की मालिश कराने का लुत्फ उठाता है, दूसरी और नौकर को वर्ग–संघर्ष का घुट्टी पिलाता है। ऐसे दोहरे चरित्रों का पर्दाफाश करने में काशीनाथ सिंह को महारत हासिल है– ''रुको, उंगलियां ऐसे तोड़ो मत, उन्हें ठीक से पुटकाओ। हाँ, इस तरह सहलाकर, नरमी के साथ। तो मैं कह रहा था कि ठाकुर साहब का सारा आबा–काबा तुम्हारी, तुम जैसे ढेर सारे लोगों की मेहनत पर खड़ा है। तुम्हे पता नहीं चला और तुम्हारी सारी पीढ़ियाँ, सारे पूर्वज इस हवेली की दीवारों में चुन दिए गए। .....जब–तक यह नहीं ढहेंगी, इन्हें तोड़ा नहीं जायेगा, तब तक वह मुक्त नहीं होगा, और इन्हें तोड़ेगा कौन, ये ही मजबूत हाथ, भारी पंजे।''

'कहानी सराय मोहन की' गाँव के जीवन पर लिखी गयी एक महत्वपूर्ण कहानी है। ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक जीवन में जातिगत व्यवस्था टूटने लगी है। इस कहानी में भारतीय समाज के परंपरागत ढाँचे के टूट कर बिखर जाने का चित्रण किया गया है। कहानी में सवर्ण बाबू और पंडित जी जो अपने–अपने घरों से एक तरह से विस्थापित कर दिए गए हैं, रात में एक धर्मशाला में शरण लेते हैं और पेट की भूख मिटाने के लिए हरिजन मजदूरों के हाथों पकाया भोजन ग्रहण करते हैं। पेट की भूख के आगे दोनों का जातीय दम्भ धराशायी हो जाता है। यह गौर करने की बात है कि वे अपनी भूख मिटाने के लिए जिस अछूत की बाटियाँ खा जाते हैं, उसके प्रति उनके मन में किसी प्रकार का .तझता का भाव नहीं है। डॉ परमानन्द

अनुरूपी लेखक

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

श्रीवास्तव लिखते हैं कि– "कहानी में तथाकथित भद्र वर्ग के अंतर्विरोधों और चालाकियों की व्यंग्य–कथा रस लेकर कही गयी है, दूसरे वर्ग का प्रतिनिधि है मोहन राम। मोहन राम चमार, जिसकी बाटियाँ खाकर भद्रजन सुखी हैं, यद्यपि डरते हैं कि बात 'बाहर' न चली जाए।" गाँवों में आये सामाजिक बदलाव के सन्दर्भ में काशीनाथ सिंह यह दिखाते हैं कि जहाँ जाति का परंपरागत ढाँचा टूटा है वहीं पूँजीपति वर्ग की पकड़ उस पर मजबूत हुई है –। .....न आप बाभन रह गए हैं, न मैं ठाकुर रह गया हूँ, न चमार, चमार रह गया है और न लुहार, लुहार.....हम कहीं पहुँचे नहीं हैं, लेकिन जगह जरूर छूट गयी है। .....सिर्फ एक को छोड़कर बाबू साहब, पंडित जी की आवाज ऊँची हो गयी– बनिया को। कोई बनिया आज तक अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ है।" 'अपना रास्ता लो बाबा' कहानी शहरी मध्यवर्गीय जीवन और गाँवों के जीवनमूल्यों को तुलनात्मक .ष्टि से सामने लाती है। नगरीकरण के कारण बड़ी संख्या में लोग गाँव छोड़कर रोजी–रोटी की तलाश में शहरों में बस गए। उनका आर्थिक .ष्टि से विकास भी हुआ और जीवन स्तर भी सुधरा। साथ ही काफी तकलीफदेह स्थितियां भी पैदा हुईं। मध्यवर्गीय शहरी बाबू की स्थिति यह होती जा रही है कि वे अपने ही परिवार के लोगों के साथ बनावटी सम्बन्ध जीतें हैं। कहानी का मध्यवर्गीय शहरी चरित्र देवनाथ गाँव से शहर आये अपने ताऊ को टालना चाहता था, उसी बाबा को जिनके कंधे पर चढ़कर वह बचपन में मूतता था। किन्तु जब वे अंदर आ जाते हैं तो वह अपनी पत्नी से लड़–झगड़कर उनके भीतर आस्था और विश्वास जगाता है। देवनाथ के बच्चे बाबा के सिर पर लादकर लाये गए गन्ने के रस और होरहा के महत्त्व को नहीं समझते तथा उसे नाली में उड़ेल देते हैं। पत्नी सड़ी हुई मिठाइयाँ उनके आगे परोस देती है, पेट दर्द का इलाज कराने आये बाबा को देवनाथ अपने किसी मित्र डॉक्टर को दिखा देता है और उनके पेट में हुए कैंसर की बात इसलिए छुपा जाता है कि ऑपरेशन करने के बाद महीनों की आर्थिक एवं मानसिक परेशानियों से बच सके। वह सस्ती दवाएँ खरीदकर बाबा के सामने अपनी सहृदयता एवं जिम्मेदारी का भाव प्रदर्शित करता है। अंततः वह बाबा को झूठी तसल्ली देकर उन्हें गाँव का 'रास्ता' पकड़ा देता है। यहाँ काशीनाथ सिंह किसी मोहबंध में न पड़कर मध्यवर्गीय चरित्र के दिखावटीपन को उसकी आत्मप्रवंचना को एवं घर–परिवार के रिश्तों में आते जा रहे खोखलेपन की बखिया उधेड़ कर रख देते हैं।

भूमंडलीकृत दुनिया में जिंदगी तेजी से बदली है और इन बदलावों को दर्ज करने में पिछड़ जाने वाला लेखक अपने को समकालीन बनाये नहीं रख सकता। काशीनाथ सिंह की कहानी – 'पाँड़े कौन कुमति तोहें लागी' में जिंदगी का यह बदलाव चित्रित हुआ है। यह कहानी वर्ण–व्यवस्था और उससे उत्पन्न होने वाले मूल्यों और संस्कारों की आलोचना करती है। कहानी में पंडित सत्यनारायण की टेक थी कि वह अपनी पारम्परिक मर्यादा से समझौता नहीं करेंगे। 'मर्यादा भी ससुरी कोई चीज होती है या नहीं।' 'अपने वक्त की धड़कनों को समझना ही सबसे बड़ा ज्ञान है।' "यह बात वे नहीं समझ पाए, शुरू में पांडेय धर्मनाथ शास्त्री को भी यह बात समझ में नहीं आयी, लेकिन जल्दी ही उन्होनें तन्नी गुरु के प्रताप से अपनी खस्ता–माली हालत बेहतर करने के लिए 'जमाने के हिसाब से चलना' सीख लिया और पत्नी को भी सिखा दिया। पैसे की लालच में एक विदेशी युवती को अपने यहाँ पेइंग गेस्ट के रूप में रखने को राजी हो गए। शिवालय को शौचालय में तब्दील कर दिया। यह वही धर्मनाथ शास्त्री हैं जिनके डर से किसी बाम्हन को अपने मकान में किसी अंग्रेज–अंग्रेजिन को रखने की हिम्मत नहीं होती थी, क्योंकि अगर रखा तो जीने नहीं देंगे पांडेय धर्मनाथ शास्त्री। शास्त्री जी का यह रूपांतरण अटपटा नहीं लगता क्योंकि कहानी का टोन कॉमिक है। इस कॉमिक टोन के नीचे लाचारी का दर्द दबा हुआ है। शास्त्री जी एक ऐसे ट्रैजिक पात्र हैं जो जमाने के हिसाब से चलने के फेर में कॉमिक हो गए हैं। उन पर तरस खाया जा सकता है। वे दया के पात्र हैं, किन्तु घृणा के पात्र तो बिलकुल नहीं।" काशीनाथ सिंह की कहानियों में उनका एक व्यंग्यकार का रूप भी उभरता है। चुने हुए शब्दों का प्रयोग, वाक्य विन्यास, बात उठाने का चुटीला अंदाज और ब्योरे रचने की कला में काशीनाथ सिंह माहिर हैं। उनके छोटे–छोटे वाक्यों की कसावट दखते ही बनती है। एक उच्चस्तरीय शिल्प के साथ वे अपनी कहानियों को एक बड़े सामाजिक बदलाव का हथियार बनाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ काशीनाथ सिंह : प्रतिनिधि कहानियां पृष्ठ – 99
2. संपादक डॉ रामकली सर्राफ : समकालीन कहानी की रचनात्मक अंर्त.ष्टि, पृष्ट 112
3. काशीनाथ सिंह : प्रतिनिधि कहानियां पृष्ठ 55
4. वर्तमान साहित्य, कहानी महाविशेषांक पृष्ठ 516
5. डॉ काशीनाथ सिंह : सदी का सबसे बड़ा आदमी, पृष्ठ 25–26
6. तद्भव, अक्टूबर 2011, पृष्ठ 160, राजकुमार का लेख–कहानी पच्चीस साल की, से।

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14